# जनपद कानपुर नगर का औद्योगिक परिदृश्य

औद्योगिक दृष्टि से जनपद कानपुर का हमारे देश एवं प्रदेश में एक विशिष्ट स्थान है । स्वतन्त्रता के पूर्व की प्रमुख छावनी होने के कारण कानपुर नगर में सैनिक आपूर्ति एवं टेक्सटाइल्स उद्योग प्रमुख रूप से स्थापित हुए और तत्कालीन समय में भारत का मैनचेस्टर कहलाने का गौरव प्राप्त किया । शनैः–शनैः अवस्थापना सुविधाओं, उद्यमिता विकास, विद्युत आपूर्ति में व्यवधान एवं आधुनिकतम तकनीकी न अपनाये जाने के कारण यह नगर अपना औद्योगिक वैभव बनाये नहीं रख सका। टेक्सटाइल मिल एक–एक करके बन्द होते गये एवं विभिन्न उत्पादों के उद्योग स्थापित होते रहे । प्रमुख रूप से चर्म उद्योग, सैडलरी, सोप एवं डिटर्जेन्ट उद्योग, मसाले, होजरी, रेडीमेड वस्त्र, प्लास्टिक उद्योग, पान मसाला, पैकेजिंग उद्योग, इन्जीनियरिंग, केमिकल्स, रक्षा सामग्री आदि के क्षेत्र में अधिकाधिक संख्या में जनपद में उद्योग स्थापित हुए । 31 मार्च 2007 तक कुल 16939 लघु उद्योग स्थापित हुए हैं जिनमें रु0 322.51 करोड़ पूँजी विनियोजन किया गया है तथा 68381 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हुआ है ।

## बृहद एवं मध्यम उद्योग

जनपद में बृहद एवं मध्यम स्तर के उद्योग प्रमुख रूप से लेदर एवं लेदर शू, शू अपर, वेजिटेबिल आयल, टू–व्हीलर, थ्री व्हीलर, शुगर मिल, पार्टीकल बोर्ड, न्यूजपेपर प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रियल मशीनरी, नॉयलान यार्न, इण्डस्ट्रियल थ्रेड, सर्कुलर लूम, मोजे, रोटोमैक पेन भारत सरकार के रक्षा प्रतिष्ठान, एच.ए.एल., बी.आई.सी. के लाल इमली वूलेन मिल्स एवं भारत सरकार की आर्टीफिसिल लिम्ब्स उद्योग आदि की कुल 76 बृहद/मध्यम उद्योग स्थापित हैं, जिनमें रु0 2834.28 करोड़ रु0 का पूँजी विनियोजन किया गया है एवं 54851 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हुआ है ।

## जनपद के प्रमुख उद्योग

### 1. (क) चर्म शोधन (टेनरी) :–

इस जनपद का प्राचीन एवं प्रमुख उद्योग है । चर्म उत्पादन का कार्य अंग्रेजों द्वारा यहां शुरू किया गया । कच्चे माल की उपलब्धता, सैनिक छावनी एवं देश के अन्य शहरों से सीधे सम्पर्क होने के कारण अंग्रेजों द्वारा यहां सैडलरी, हार्नेस तथा लेदर शू के कारखाने सेना को वस्तुओं की आपूर्ति के लिये प्रमुखतः स्थापित किये गये । कालान्तर में कानपुर कच्चे चमड़े का बड़ा व्यापारिक केन्द्र बन गया । चर्म उद्योग श्रम आधारित उद्योग हैं । इसमें लगभग 86,000 व्यक्ति रोजगार में लगे हैं । टेनरी के सभी कारखाने जाजमऊ क्षेत्र में स्थापित हैं । यहां प्रमुख रूप से भैंस के चमड़े के शोधन की इकाइयां (टेनरी) स्थापित हैं, जिनकी कुल संख्या 396 हैं । इनमें चर्मशोधन दो प्रकार से किया जाता है ।
(1) वेजिटेबल पद्धति से (2) क्रोम पद्धति से । कानपुर–उन्नाव क्षेत्र में चर्म उत्पादन का प्रतिवर्ष टर्नओवर लगभग 2637 करोड़ रु0 है ।

क्रमशः––––2

कानपुर–उन्नाव क्षेत्र में लेदर/लेदर गुड्स/शू/शू अपर/सैडलरी की लगभग 342 इकाईयों द्वारा निर्यात किया जा रहा है । प्रमुख रूप से यू0एस0ए0, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, साउथ अफ्रीका, यूरोपीय देशों को निर्यात किया जा रहा है ।

**चर्म वस्तुओं के निर्यात की स्थितिः**

| वर्ष | निर्यात |
|---|---|
| 2000–01 | रु0 1067 करोड़ |
| 01–02 | रु0 1273 करोड़ |
| 02–03 | रु0 1439 करोड़ |
| 03–04 | रु0 1637 करोड़ |
| 04–05 | रु0 1732 करोड़ |
| 05–06 | रु0 1891 करोड |
| 06–07 | रु0 1967 करोड |

**(ख)–लेदर गुड्स :–**

कानपुर नगर का यह महत्वपूर्ण उद्योग है । इन वस्तुओं में बैग, पर्स, बेल्ट प्रमुख हैं, यहां पर बनी वस्तुएं अन्य कई देशों में भी निर्यात की जाती हैं। विगत वर्षों में इस वर्ग के उद्योगों की स्थापना में वृद्धि हुई है ।

**(ग)– चमड़े के जूते, चप्पल :–**

जनपद में कच्चे माल की उपलब्धता, परम्परागत कारीगर एवं मार्केटिंग की बेहतर व्यवस्था होने के कारण अच्छी किस्म की चप्पले, जूते व सैण्डिल तैयार किये जाते हैं जिनका अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में महत्वपूर्ण स्थान है एवं अच्छी मांग है । शू अपर, शू का निर्यात इकाईयों द्वारा किया जा रहा है ।

**2– सैडलरी आइटम्सः–**

चमड़े की वस्तुओं, जूते–चप्पल व चर्म प्रशोधन के अलावा भी कानपुर नगर में सैडलरी व घुड़सवारी से सम्बन्धित अन्य आइटम्स बहुत ही अच्छी गुणवत्ता के बनाये जाते हैं । चमड़े की वस्तुएं बनाने की उद्योगों के विकास का मुख्य कारण यहां का चर्मशोधन उद्योग है जो बढ़िया चमड़ा व इसका स्थानीय बाजार देता है । सैडलरी की लगभग 305 इकाइयां स्थापित एवं कार्यरत है । हमारे देश में केवल कानपुर में ही सैडलरी आइटम्स बनाये जाते हैं । यह निर्यातमूलक उद्योग हैं । इसका निर्यात आस्ट्रेलिया, यू0एस0ए0, इंग्लैण्ड, डेनमार्क साउथ अफ्रीका एवं यूरोपियन देशों को किया जाता है तथा सेना में भी आपूर्ति की जाती है ।

**3– कृषि आधारित उद्योग :–**

इस जनपद में लाल बंगला क्षेत्र में दाल बनाने के उद्योग स्थापित हैं इसीलिए लाल बंगला क्षेत्र दाल उद्योग के कारण प्रमुख स्थान रखता है । पनकी औ.क्षे. में भी दाल प्रशोधन की इकाईयां स्थापित हैं । इसी प्रकार खाद्य मसाले पनकी औ.क्षे. दादानगर, मन्धना एवं अन्य क्षेत्रों में बनाए जाते हैं । मसाले/अचार के उत्पादन के क्षेत्र में कानपुर प्रसिद्ध है । यहां के अशोक मसाले, गोल्डी मसाले एवं अचार, पारस मसाले पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्ध है । जनपद में राइस मिलें, आयल मिलें, फ्लोर मिलें स्थापित हैं । जनपद में इस प्रकार के लगभग 160 छोटे बड़े उद्योग स्थापित हैं ।

क्रमशः––––3

**4— इन्जीनियरिंग वस्तुएं :—**

इस उद्योग में अधिकांश कुशल व्यक्ति होते हैं । इसमें लगी इकाईयां अपना स्वयं में उत्पादन जॉब कार्य अथवा उत्पादन कार्य एक साथ करती है । कल—कारखानों का शहर होने के कारण इन इकाईयों के लिए स्थानीय स्तर पर भी बाजार उपलब्ध है ।

**5— सोप एवं डिटर्जेन्ट :—**

यह एक प्रमुख तथा उभरता हुआ उद्योग है। जनपद में सोप उद्योग की 15 प्रमुख इकाइयां कार्यरत हैं । डिटर्जेन्ट पाउडर की 212 इकाईयां जनपद में कार्यरत हैं एवं डिटर्जेण्ट केक की 73 इकाइयां स्थापित हैं। इस उद्योग का वार्षिक टर्नओवर 545 करोड़ रु0 का है जिसमें के0टी0सी0 लि0 (घड़ी डिटर्जेण्ट) का अकेले शेयर 75 प्रतिशत है। केवल सोप यूनिट्स का टर्न ओवर 22 करोड़ रु0 वार्षिक का है।

**6— स्टील फर्नीचर :—**

मेज, कम्प्यूटर फर्नीचर, कुर्सी, अल्मारी, तिजौरी, रैक आदि निर्माण करने की छोटी—छोटी इकाइयां बहुतायत में स्थापित हैं । जिसका मुख्य कारण लौह धातु से बनी वस्तुओं की मजबूती के कारण मांग का अभाव न होना, खुले बाजार में कच्चा माल आसानी से उपलब्ध होना व सरकारी स्तर पर भी आपूर्ति आदेश प्राप्त होना है ।

**7— प्लास्टिक की वस्तुएं :—**

प्रत्येक क्षेत्र में प्लास्टिक ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है । प्लास्टिक फर्नीचर, इन्जेक्शन मोल्डेड उत्पाद, शीट, बैग, फिल्म, पैकेजिंग मैटीरियल, आटो पार्ट्स, घरेलू वस्तुओं के उत्पाद आदि की अच्छी मांग के कारण इस उद्योग का विकास तीव्रता से हो रहा है । प्लास्टिक दाना इसका मुख्य कच्चा माल है जो स्थानीय बाजार में आसानी से उपलब्ध है। प्लास्टिक उद्योग से सम्बन्धित लगभग 326 इकाइयां स्थापित हैं ।

**8—रेडीमेड गारमेन्ट्स व होजरी उद्योगः—**

पैन्ट, शर्ट, बनियाइन, मोजे आदि बनाने वाली इन इकाईयों का जनपद में विशिष्ट स्थान है । अधिकांश अति लघु इकाइयाँ इस क्षेत्र में कार्यरत हैं । होजरी कपड़ो की लगभग 171 छोटी इकाइयां स्थापित हैं । कुछ प्रमुख ब्राण्ड ''जेट'', ''शिल्पा'', ''गेलार्ड'', ''बजट'', आदि का उत्पादन जनपद में स्थापित इकाइयों द्वारा किया जा रहा है । जनपद से प्रति वर्ष होजरी वस्त्रों का निर्यात लगभग 74 लाख रु0 का है ।

**9— पान मसाला**

पान पराग, जैसा विश्व विख्यात पान मसाला इसी जनपद में बनाया जाता है । वाह, दिलरुबा, तिरंगा, राजश्री, कमला पसन्द आदि कुछ प्रमुख ब्राण्ड के पान मसाले का उत्पादन जनपद में किया जाता है । वैसे तो यह नगर का पुराना उद्योग है किन्तु वर्तमान में अधिक मांग के कारण जनपद में कई इकाईयां इसका निर्माण कर रही हैं । सुपारी, कत्था, इलायची, पिपरमेन्ट आदि का प्रयोग कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है । इस उद्योग का वार्षिक टर्न ओवर लगभग 5000 करोड़ के आसपास है ।

**10— पैकेजिंग उद्योग :—**प्रमुख औद्योगिक शहर होने के फलस्वरूप तैयार माल के पैकेजिंग के लिये इस वर्ग की अधिक संख्या में इकाइयाँ स्थापित हुई हैं । पैकेजिंग की ये इकाइयाँ दो प्रकार की प्रमुख रूप से हैं :—

**(क) फ्लैक्सिबल प्रिन्टिग एवं पैकेजिंग उद्योग** :— इस उद्योग की लगभग 46 इकाईयां स्थापित हैं, इनका वार्षिक टर्न ओवर 171 करोड़ के आसपास है ।

क्रमशः———4

(ख) <u>पेपर पैकेजिंगः–</u>

<u>कारोगेटेड बाक्स एवं कार्टून्स</u> :– इस उद्योग की जनपद में 78 इकाइयाँ स्थापित हैं। इनका टर्न ओवर प्रति वर्ष 30 करोड़ रु0 का है । इस्टर्न यू0पी0 कलकत्ता, दिल्ली के बाद कानपुर सबसे बड़ी मण्डी है ।

11– **<u>सेना से सम्बन्धित प्रोडक्ट्स :–</u>** जनपद में ऐसी कई इकाइयाँ स्थापित हैं जो सेना में उपयोग से सम्बन्धित आइटम्स का उत्पादन करती हैं तथा आपूर्ति करती हैं । इन इकाइयों द्वारा प्रमुख रूप से बुलेट प्रूफ जैकेट एवं हेलमेट, शू, ग्लब्स, जैकेट, टेन्ट, तिरपाल, गद्दे तथा बन्दूकों के लिये स्प्रिंग आदि का उत्पादन किया जाता है ।

12 **<u>हैण्डलूम/पावरलूम व दरी उद्योग</u> :–**

नगर में बुनकरों की अच्छी संख्या होने के कारण कुटीर उद्योग जैसी श्रेणी का यह उद्योग इस जनपद का महत्वपूर्ण उद्योग है । वैसे तो जनपद के कई क्षेत्रों में इसकी इकाइयां स्थापित हैं किन्तु मुख्य रूप से फेथफुलगंज, सुजातगंज, चन्दारी नामक मुहल्लों में ज्यादा संख्या में इकाईयां कार्यरत हैं । इनमें दरी, गमछा आदि का उत्पादन किया जाता है तथा इन्हे सेना को आपूर्ति की जाती है ।

## जनपद कानपुर में निर्यात

निर्यात की दृष्टि से कानपुर जनपद का प्रदेश में प्रमुख स्थान है । यहां से अनेक उत्पादन– स्कूटर, आटो–पार्ट्स, लेदर, लेदर गुड्स, शू, शू अपर, सैडलरी, काटन होजरी, मोजे, मसाले एवं एसेंसियल ऑयल, सर्जिकल ब्लेड, सर्जिकल बैण्डेज, पेन्ट, डिटर्जेन्ट, पेन, इण्ड. मशीनरी, होम्योपैथिक दवायें आदि का निर्यात विदेशों में किया जाता है । यहां के उद्योगों द्वारा विदेशों से यंत्र/संयंत्रों का आयात भी किया जाता है । जनपद में मार्च 2007 तक 264 मैन्युफैक्चरर्स/ट्रेडर्स निर्यातक के रूप में एक्सपोर्ट प्रमोशन ब्यूरो में पंजीकृत हैं । निर्यात के क्षेत्र में चर्म उद्योग सर्वोपरि स्थान रखता है । वर्ष 2006–07 में कानपुर–उन्नाव क्षेत्र की चर्म आधारित उद्योगों द्वारा रु0 1967.31 करोड़ का निर्यात किया गया है । जनपद की इकाइयों द्वारा प्रमुख रूप से यू0एस0ए0, यू0के0, फ्रांस, इटली, आस्ट्रेलिया, डेनमार्क, साउथ अफ्रीका एवं अन्य यूरोपियन देश, साउथ ईस्ट के देशों, श्रीलंका आदि को निर्यात किया जा रहा है ।

निर्यातकों की सुविधा के लिये कन्टेनर कारपोरेशन आफ इण्डिया द्वारा कन्टेनर डिपो, चकेरी एवं जूही में स्थापित किये गये हैं ।

जिला उद्योग केन्द्र, कानपुर नगर में भी निर्यातकों को सुविधायें एवं सहायता उपलब्ध कराने हेतु ''निर्यात'' सेल बनाया गया है ।

निर्यात बढ़ाने हेतु ''निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो'' द्वारा उ0प्र0 निर्यातकों के लिए निम्न योजना चलाई जा रही है । :–

1– निर्यातकों का पंजीयन
2– विपणन विकास योजना
3– फ्रेट प्रतिपूर्ति योजना
4– निर्यात पुरस्कार योजना

एक्सपोर्ट प्रमोशन ब्यूरो, उ0प्र0 द्वारा उपरोक्त योजनाओं में मार्च 2007 तक 202 निर्यातकों को रु0 69 लाख की धनराशि उपलब्ध करायी गयी है ।

## क्रिटिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर बैलेंसिंग स्कीम (सी0आई0बी0)

निर्यात बाहुल्य क्षेत्रों की आवस्थापना सुविधाओं के उच्चीकरण हेतु वर्ष (96–97) से भारत सरकार ,द्वारा यह योजना लागू की गयी है । इस योजना के अन्तर्गत जाजमऊ क्षेत्र में विद्युत व्यवस्था में सुधार हेतु रु03.50 करोड़ रु0 की लागत से वाजिदपुर–पोखरपुर में 33/11 के0वी0ए0 के विद्युत सब स्टेशन स्थापित किया गया है तथा नगर निगम से जाजमऊ क्षेत्र की सड़कों का सुदृढ़ीकरण एवं नालियों का निर्माण कराया गया जिसकी परियोजना लागत से 4.24 करोड़ की है ।

वर्ष 2002–03 से इस योजना को एसाइड योजना में परिवर्तित कर दिया गया है ।

## एसाइड योजना (एसिसटेंस टू स्टेटस फॉर डेवलपमेन्ट ऑफ एक्सपोर्ट)

यह योजना भारत सरकार द्वारा वर्ष 2002–03 से प्रारम्भ की गयी है जिसका मुख्य उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देने हेतु अवस्थापना सुविधाओं का विकास करना हे इसकी नोडल एजेन्सी प्रदेश में यू0पी0एस0आई0डी0सी0 है इस योजना में परियोजना लागत का 75% अंश केन्द्र सरकार से 15% अंश राज्य सरकार/अन्य सरकारी एजेन्सी तथा 10% अंश निजी क्षेत्र/एसोसिएशन द्वारा लगाया जाना है ।

इस योजनान्तर्गत जाजमऊ क्षेत्र में उद्योगों को अबाध विद्युत आपूर्ति हेतु स्वतंत्र फीडर की स्थापना हेतु 33 के0वी0 लाइन का निर्माण करते हुए 11 के0वी0 पोषक फीडर रु0 4,02,46,234/– का प्रस्ताव तैयार हुआ है ।

सब स्टेशन की स्थापना हेतु जमीन की व्यवस्था लगभग अन्तिम चरण में है जिसके प्राप्त होते ही स्थापना का कार्य प्रारम्भ हो जायेगा ।

इसी प्रकार इसी योजनान्तर्गत चौबेपुर औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत उद्योगों को अबाध विद्युत आपूर्ति हेतु स्वतंत्र फीडर की स्थापना की जा रही है, जिसके लिए रु0 837.54 लाख का प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका है तथा रु0 1,19,00,000/– इण्डियन इण्डस्ट्रीज एसोशिएशन ने अपना अंश जमा कर दिया है । शेष भारत सरकार के रु0 4,37,54,033/–एवं उ0प्र0 पावर कारपोरेशन लि0 का रु0 2,81,00,000/– अंशदान है ।

## कानपुर स्पेशल इकोनामिक जोन

निर्यात को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा घोषित आयात–निर्यात नीति 2000–01 के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों में स्पेशल इकोनामिक जोन स्थापित करने की योजना बनायी गयी है जिसके अन्तर्गत प्रदेश के निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए एवं विदेशी निवेश के साथ आधुनिक तकनीकि के आयात तथा सार्वजनिक क्षेत्र तथा संयुक्त क्षेत्र के उद्योगों के विकास की दृष्टि से प्रदेश में चार स्पेशल इकानामिक जोन कानपुर, वाराणसी, नोयडा, मुरादाबाद में स्वीकृत किये गये हैं । इन क्षेत्रों में स्थापित होने वाले उद्योगों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अवस्थापना सुविधायें उपलब्ध होंगी । यह ड्यूटी फ्री क्षेत्र होगा तथा वाणिज्यिक कार्य ड्यूटी एवं टेरिफ के लिए विदेशी क्षेत्र माना जायेगा ।

## स्पेशल इकोनामिक जोन की मुख्य सुविधायें

- यह ड्यूटी फ्री क्षेत्र होगा तथा वाणिज्यिक कार्य, ड्यूटी एवं टैरिफ के लिए विदेशी क्षेत्र (फारेन टेरिटरी) माना जायेगा ।
- इस क्षेत्र में किसी वस्तु के आयात के लिए कोई लाइसेन्स आवश्यक नहीं होगा ।
- कैपिटल गुड्स, कच्चा माल, स्पेयर पार्टस आदि के आयात पर कस्टम ड्यूटी देने से छूट प्राप्त होगी ।
- ऐसी कैपिटल गुड्स, कच्चा माल, स्पेयर पार्टस जो देश के भीतर से ही क्रय किये जायेगें उन पर केन्द्रीय एक्साइज ड्यूटी से छूट प्राप्त होगी ।
- राज्य के अन्य क्षेत्रों से एस0ई0जेड0 को आपूर्ति की गयी वस्तुओं को निर्यात माना जायेगा ।
- देश के भीतर से ही क्रय की गयी वस्तुओं के सम्बन्ध में अदा किये गये केन्द्रीय सेल्स टैक्स की प्रतिपूर्ति महानिदेशक फारेन ट्रेड की नीति के आधार पर की जायेगी ।
- लघु उद्योग क्षेत्र के लिये आरक्षित वस्तुओं के सम्बन्ध में कोई औद्योगिक लाईसेन्स लिये जाने से छूट होगी ।
- इस जोन में स्थापित इकाईयों को इनकम टेक्स अधिनियम के प्राविधानों के अधीन वर्ष 2010 तक कार्पोरेट टैक्स हालीडे उपलब्ध रहेगी ।
- ऐसे जोन में कार्यरत इकाई, उत्पादित वस्तुओं की बिक्री देश में ड्यूटी अदा करने पर कर पायेगी । लघु उद्योग हेतु आरक्षित आइटम पर विदेश पूँजी निवेश की कोई ऊपरी सीमा निर्धारित नहीं की गयी है ।
- ऐसे जोन में समस्त सुविधायें जैसेः– बैंक, पोस्ट आफिस, क्लीयरिंग एजेन्ट आदि की सुविधायें उपलब्ध होंगी ।

## विशेष आर्थिक क्षेत्र कानपुर का संक्षिप्त विवरण

- गंगा बैराज बनने के फलस्वरूप जलप्लावन से बचने वाले 45000 एकड़ भू–क्षेत्र (उन्नाव साइड) पर प्रस्तावित
- प्रथम चरण के विकास हेतु 1070 एकड़ भू क्षेत्र अधिग्रहित
- दूसरे चरण में 2700 एकड़ का अधिग्रहण प्रस्तावित

## जनपद में स्थापित औद्योगिक आस्थान/औद्योगिक क्षेत्र का विवरण

| क्रम सं0 | नाम | विभाग का नाम | कुल भूखण्ड/ शेड | आवंटित भूखण्ड/शेड |
|---|---|---|---|---|
| 1 | राजकीय औ0आ0, कालपी रोड | उद्योग विभाग | 110 | 110 |
| 2 | शि0 बे0औ0आ0, पनकी | उद्योग विभाग | 31 | 31 |
| 3 | अपट्रान स्टेट | अपट्रान | 41 | 41 |
| 4 | औ0 क्षे0, पनकी | यू0पी0एस0आई0डी0सी0 | 1369 | 1369 |
| 5 | कोओपरेटिव इण्ड0 स्टेट, दादानगर | कोआपरेटिव सोसाइटी | 311 | 311 |
| 6 | औ0क्षे0 रूमा | यू0पी0एस0आई0डी0सी0 | 300 | 155 |

## होजरी एवं टेक्सटाइल पार्क, रूमा की वर्तमान स्थिति

उ0प्र0 राज्य औद्योगिक विकास निगम लि0 द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग–2 पर रामादेवी चौराहे से 03 किमी0 आगे उपरोक्त औ0क्षे0 की स्थापना की गयी है । निगम द्वारा उपरोक्त हेतु 175 एकड़ भूमि पर आवश्यक अवस्थापना सुविधाएं विकसित करके कुल 300 भूखण्ड सृजित किये गये हैं । भारत सरकार द्वारा स्वीकृत इस महत्वाकांक्षी परियोजना में प्रदूषणयुक्त वस्त्रों की रंगाई एवं धुलाई की परियोजनाओं हेतु एक अलग जोन विकसित किया गया है जिसमें सी0ई0टी0पी0 की स्थापना की जा रही है ।

प्रथम चरण में रेडीमेड गारमेन्ट, होजरी एवं टेक्सटाइल इकाईयों हेतु कुल 155 भूखण्डों का आवंटन किया जा चुका है । द्वितीय चरण में विकसित भूखण्डों का आवंटन यथाशीघ्र प्रारम्भ किया जा रहा है । निगम द्वारा उद्यमियों को प्रोत्साहित करने हेतु दि0 01.05.03 के पश्चात एक वर्ष की अवधि में कम से कम 30 प्रतिशत आच्छादित भूखण्ड के क्षेत्रफल के साथ उत्पादन प्रारम्भ करने पर रु0 200/– प्रति वर्गमी0 की दर से, 18 माह में उत्पादन प्रारम्भ करने वाली इकाइयों को रु0 100/– की दर से छूट अनुमन्य की जायेगी वर्तमान में भूखण्डों की आवंटन दरें निम्न प्रकार निर्धारित की गयी हैं ।

अ) प्रदूषणयुक्त इकाईयों हेतु रु0 825/– प्रति वर्ग मी0

ब) अन्य होजरी एवं गारमेन्ट हेतु रु0 800/– प्रति वर्गमी0

उद्यमियों की सुविधाओं हेतु औ0क्षे0 में पेट्रोल पम्प, धर्मकांटा, ट्रेनिंग सेन्टर, गुणवत्ता जांच, प्रयोगशाला अस्पताल गोदाम एवं अन्य सुविधाओं हेतु भी भूखण्ड आरक्षित किये गये हैं । इस औद्योगिक क्षेत्र में कानपुर महानगर में पूर्व से स्थापित एवं निर्यातपरक इकाईयों को प्राथमिकता पर भूखण्ड आवंटित करने का प्राविधान किया गया है ।